IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSRJHSS)
ISSN: 2279-0845 Volume 1, Issue 1 (July-August 2012), PP 75-78
www.iosrjournals.org

गोपीचंद नारंग

ताहिरा बानों

व्याख्याता उर्दू

राजकीय मीरा कन्या महाविधालय उदयपुर *(राजस्थान)*

परिचय

गोपीचंद नारंग 11 फरवरी1931 जन्म,गोपीचन्द नारंग हिन्दी-उर्दू साहित्यकार थे जिन्हें भारत सरकार द्वारा सन 2004 मे साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। इनके द्वारा रचित एक समालोचना साख्तियात पस–साख्तियात और मशरीक़ी शेरियात के लिये उन्हें सन् १९९५ में साहित्य अकादमी पुरस्कार (उर्दू) से सम्मानित किया गया।

शिक्षा

नारंग ने दिल्ली विश्वविद्यालय से उर्दू में मास्टर डिग्री प्राप्त की , और 1958 में अपनी पीएचडी पूरी करने के लिए शिक्षा मंत्रालय से एक शोध फेलोशिप प्राप्त की।

टीचिंगकरियर

नारंग ने दिल्ली विश्वविद्यालय में शामिल होने से पहले सेंट स्टीफंस कॉलेज (1957-58) में उर्दू साहित्य पढ़ाया , जहां वे 1961 में पाठक बने। 1963 और 1968 में वे विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर थे , मिनेसोटा विश्वविद्यालय में भी पढ़ाते थे और ओस्लो विश्वविद्यालय । नारंग ने 1974 में नई दिल्ली में जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में प्रवेश लिया, 1986 से 1995 तक दिल्ली विश्वविद्यालय में फिर से शामिल हुए। 2005 में, विश्वविद्यालय ने उन्हें प्रोफेसर एमेरिटस नाम दिया।

नारंग की पहली पुस्तक (दिल्ली उर्दू की कारखंडारी बोली) 1961 में प्रकाशित हुई थी, जो स्वदेशी श्रमिकों और कारीगरों दिल्ली द्वारा बोली जाने वाली उपेक्षित बोली का समाजशास्त्रीय विश्लेषण है। उन्होंने उर्दू, अंग्रेजी और हिंदी में 60 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं ।

उपलब्धियों

उन्होंने तीन अध्ययनों का निर्माण किया है: हिंदुस्तानी क़िसों से मख़ूज़ उर्दू मसनवियाँ (1961), उर्दू ग़ज़ल और हिंदुस्तानी ज़ेहन-ओ-तहज़ीब (2002) और हिंदुस्तान की तहरीक-ए-आज़ादी और उर्दू शायरी (2003)। नारंग के संबंधित खंड- अमीर खुसरो का हिंदवी कलाम (1987), सनिहा-ए-करबला बताउर शेरी इस्तिआरा (1986) और उर्दू ज़बान और लिसानियत (2006) - सामाजिक-सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अध्ययन हैं।

अध्यापन के अलावा, नारंग दिल्ली उर्दू अकादमी (1996-1999) के उपाध्यक्ष और उर्दू भाषा के प्रचार के लिए राष्ट्रीय परिषद - एचआरडी (1998-2004) और उपाध्यक्ष (1998-2002) और अध्यक्ष (2003-) थे। 2007) साहित्य अकादमी के ।

सम्मान

नारंग को उनके काम के लिए जाना जाता है। वह 2002 से 2004 तक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के इंदिरा गांधी मेमोरियल फेलो थे , और 1997 में इटली में रॉकफेलर फाउंडेशन बेलाजियो सेंटर के निवासी थे। नारंग ने मैजिनी गोल्ड मेडल (इटली, 2005), अमीर खुसरो अवार्ड (शिकागो, 1987), एक कनाडाई एकेडमी ऑफ उर्दू लैंग्वेज एंड लिटरेचर अवार्ड (टोरंटो, 1987), एसोसिएशन ऑफ एशियन स्टडीज (मिड-अटलांटिक रीजन) अवार्ड प्राप्त किया। यूएस, 1982), एक यूरोपीय उर्दू राइटर्स सोसाइटी अवार्ड (लंदन, 2005), एक उर्दू मरकज़ इंटरनेशनल अवार्ड (लॉस एंजिल्स, 1995) और एक आलमी फ़रोग़-ए-उर्दू अदब अवार्ड (दोहा, 1998)। वह भारत और पाकिस्तान दोनों के राष्ट्रपतियों द्वारा सम्मानित

एकमात्र उर्दू लेखक हैं। 1977 में नारंग ने अल्लामा इकबाल पर अपने काम के लिए पाकिस्तान से राष्ट्रपति का राष्ट्रीय स्वर्ण पदक प्राप्त किया, और भारत से पद्म भूषण (2004) और पद्म श्री (1990) प्राप्त किया | नारंग को 1995 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1985 में ग़ालिब पुरस्कार, उर्दू अकादमी के बहादुर शाह ज़फ़र पुरस्कार, भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार (दोनों 2010 में) की मानद उपाधि प्राप्त की |

साहित्यिकचोरीऔरविवाद

गोपी चंद नारंग पर उनकी साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता पुस्तक सख्तियात, पास-सख्तियात और मशरिकी शेरियत (संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद और पूर्वी काव्यशास्त्र) के प्रमुख अंशों की नकल और अनुवाद करने के लिए साहित्यिक चोरी का आरोप लगाया गया है । उनकी अध्यक्षता में साहित्य अकादमी के तहत भ्रष्टाचार और विवादास्पद नियुक्तियों के आरोप भी लगे हैं, हालांकि, हाल के एक लेख 'कैसे लेखक और आलोचक गोपी चंद नारंग एक दुर्भावनापूर्ण अभियान से बच गए' में उक्त दुर्भावनापूर्ण आरोपों का खंडन किया गया है। लेखक ने स्पष्ट रूप से कहा है कि गोपी चंद नारंग को उर्दू में अवास्तविक आधुनिकतावाद की आलोचना के लिए निशाना बनाया गया था। यह उनके खिलाफ केवल प्रचार था जो साहित्यिक जांच या किसी गंभीर बहस को बर्दाश्त नहीं कर सकता, जिन्होंने उन्हें बदनाम करने की कोशिश की, उन्हें उनके काम या साहित्यिक उद्देश्यों की कोई समझ नहीं थी।

पुरस्कार [संपादित करें]

- पद्मभूषण (2004) साहित्य अकादमी पुरस्कार (1995)
- गालिब पुरस्कार) 1985)
- पाकिस्तान राष्ट्रपति स्वर्ण पतक) 1977)

ग्रंथसूची [संपादित करें]

नारंग ने भाषा, साहित्य, कविता और सांस्कृतिक अध्ययन पर 60 से अधिक विद्वतापूर्ण और आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित की हैं; कई का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

उर्दू [संपादित करें]

- हिंदुस्तानी किस्सों से मखुज उर्दू मसनवियां (1961)
- इम्ला नामा (1974)
- पुराणों की कहानियां (1976)
- अनीस शनासी (1981)
- सफर आशना (1982)
- इकबाल का फैन (सं .1983)
- उस्लोबियत-ए-मीर (1985)
- उर्दू अफसाना, रिवायत और मसाइल (सं .1986)
- सनिहा-ए-करबाला बतौर शेरी इस्तिआरा (1986)
- आमिर खुसरो का हिंदवी कलाम (1987)
- अद्बी तनकीद और उस्लोबियत (1989)
- कारी आस तनकीद (1992)
- सख्तियत, पास-सख्तियत और मशरिकी शेरियत (1993)
- उर्दू ग़ज़ल और हिंदुस्तानी जहाँ-ओ तहज़ीब (2002)
- हिंदुस्तान की तहरीक-ए-आजादी और उर्दू शायरी (2003)
- तारक़ी पसंददी, जदीदियत, मबद-ए-जदीदियत (2004)

- अनीस और दबीर (2005)
- जदीदियात के बाद (2005)
- उर्दू की नई बस्ती) 2006)
- उर्दू ज़बान और लिसानियत (2006)
- सज्जाद ज़हीर :अदाबी ख़िदमत और तारक़ी पसंद तहरीक (2007)
- फिराक गोरखपुरी :शायर, नक्काद, दानीश्वर (2008)
- देखना तकरीर की लज्जत (2009)
- फिक्शन शेरियत (2009)
- ख्वाजा अहमद फारूकी के खुटौत गोपी चंद नारंग के नाम (2010)

अंग्रेज़ी [संपादित करें]

- दिल्ली उर्दू की करखंडारी बोली (1961)
- उर्दू भाषा और साहित्य :महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य (1991)
- साहित्यिक उर्दू गद्य में पढ़ना (सं .1965)
- राजिंदर सिंह बेदी :चयनित लघु कथाएँ (सं .1989)
- कृष्ण चंदर :चयनित लघु कथाएँ (सं .1990)
- बलवंत सिंह :चयनित लघु कथाएँ (सं .1996)

हिंदी [संपादित करें]

- आमिर खुसरो का हिंदवी कलाम (1987)
- पाठकवादी आलोचना (1999)
- उर्दू पर खुलता दरीचा (2004)
- बिसविन शताब्दी में उर्दू साहित्य (2005)
- संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद और प्राच्य काव्यशास्त्र (2000)
- उर्दू कैसे लिखे (2001)

गोपी चंद नारंग पर पुस्तकें[संपादित करें]

- डॉ मो .हामिद अली खान 1995. गोपी चंद नारंग :हयात ओ खिदमात। दिल्ली :एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- मनाज़ीर आशिक हरगंवी। 1995. गोपी चंद नारंग और अदाबी नज़रिया साज़ी। नई दिल्ली :अदब प्रकाशन।
- अब्दुल हक, एड .1996. अर्मुघान-ए नारंग। नई दिल्ली :मॉडर्न पब्लिशिंग हाउस।] दिल्ली विश्वविद्यालय से उनकी सेवानिवृत्ति की पूर्व संध्या पर प्रो .गोपी चंद नारंग के सम्मान में चयनित पत्र।[
- शहजाद अंजुम, एड .2003. दीदावर नक़्क़ाद गोपी चंद नारंग, शहज़ीद अंजुम द्वारा संपादित। दिल्ली :एजुकेशन पब्लिशिंग हाउस।
- अब्दुल मन्नान तारज़ी। 2003. नारंग ज़ार :प्रोफेसर नारंग की हयात और अदाबी ख़िदमत का मंज़ूम तनक़ीदी जैज़ा। नई दिल्ली :मकतबा इस्ताआरा।
- फे। देखा गया। एजाज, एड .2004. गोपी चंद नारंग) नियमित पुस्तक संस्करण(। कोलकाता :इंशा प्रकाशन।
- सैफी सिरोंजी। 2006. गोपी चंद नारंग और उर्दू तन्कीद। सिरोंज :इंतिसाब प्रकाशन।
- नंद किशोर विक्रम। 2008. बैन उल-अक्वामी उर्दू शाखसियत :गोपी चंद नारंग। दिल्ली :प्रकाशक और विज्ञापनदाता।
- मौला बख्श। 2009. जदीद अदाबी थ्योरी और गोपी चंद नारंग। दिल्ली :एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस।

- मुश्ताक सदफ। 2010. देखना तकरीर की लज्जत :गोपी चंद नारंग के अदाबी इंटरव्यू। बैंगलोर :कर्नाटक उर्दू अकादमी।

निष्कर्ष

प्रतिष्ठित उपन्यासकार और लघु कथाकार इंतिजार हुसैन ने एक बार कहा था ,'जब वह पाकिस्तान आते हैं तो प्रोफेसर गोपी चंद नारंग एक टुकड़े में भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह मैं किसी और के बारे में नहीं कह सकता। जब वह मंच पर आते हैं, तो हमें लगता है कि भारत अपनी संपूर्णता में हमें संबोधित कर रहे हैं। प्रमुख हिंदी लेखक कमलेश्वर ने उर्दू भाषा में प्रोफेसर नारंग के साहित्यिक योगदान पर उल्लेख किया था है कि प्रत्येक भारतीय भाषा को एक गोपी चंद नारंग की आवश्यकता होती है।

ज्ञानपेठ पुरस्कार विजेता कथा लेखक कुर्रतुलैन हैदर ने प्रोफेसर नारंग को उर्दू के 'पुनर्जागरण व्यक्ति' के रूप में वर्णित किया। कवि गुलजार ने उनके बारे में कहा, 'दो पांव से चलता दरिया और एक पांव पर ठहरी झील, झिल की नाभि पे रखी है, उर्दू की रौशन किंदील।' (a river moving on two wheels. A lake balanced on one foot. Settled on the lake's navel Urdu's bright paper lantern.)

सन्दर्भ

1. प्रख्यात उर्दू विद्वान गोपी चंद नारंग का निधन
2. "गोपी चंद नारंग ने "सभ्यता लाभ" के साधन के रूप में भाषा की वकालत की
3. नईम, चौधरी मोहम्मद (26 अगस्त 2009)। "सम्राट के नए कपड़े"।
4. .नारंग, गोपी चंद इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन लिटरेचर , साहित्य अकादमी , नई दिल्ली , 1989, आईएसबीएन 81-260-1804-6 ।
5. गोपी चंद नारंग: बैनुल अक्वामी उर्दू शख़्सियत , एड। नंद किशोर विक्रम द्वारा , नई दिल्ली 2008, आईएसबीएन ९ ७८१८८२ ९ ८०२० ।